विद्यालय में समुदाय की भागीदारी के तरीके

डॉ. प्रवीण कुमार तिवारी

सह आचार्य

शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

समुदाय का अर्थ

- समुदाय शब्द लैटिन भाषा के **'Com'** तथा **'Munis'** शब्दों से बना है। **Com** का अर्थ हैं **Together** अर्थात एक साथ तथा **Munis** का अर्थ **Serving** अर्थात सेवा करना। इस प्रकार समुदाय का अर्थ एक साथ मिलकर सेवा करना है।
- व्यक्तियों का ऐसा समूह जिसमें परस्पर मिलकर रहने की भावना होती है तथा जो परस्पर सहयोग द्वारा अपने अधिकारों का उपयोग करता है, समुदाय कहलाता है। प्रत्येक समुदाय के सदस्य में मनोवैज्ञानिक लगाव तथा 'हम' की भावना पाई जाती है।

समुदाय की परिभाषा

समुदाय के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों की परिभाषाएँ प्रस्तुत की जा रही हैं-

- **आगबर्न व न्यूमेयर** के अनुसार, ‘‘समुदाय व्यक्तियों का वह समूह है जो एक सन्निकट भौगोलिक क्षेत्र में रहता हो, जिसकी गतितिधियों एवं हितों के समान केन्द्र हों तथा जो जीवन के प्रमुख क्षेत्रों में इकट्ठे मिलकर कार्य करते हों।’’
- **बोगार्डस के अनुसार,** ‘‘समुदाय एक सामाजिक समूह है जिसमें ‘हम’ भावना की कुछ मात्रा हो तथा एक निश्चित क्षेत्र में रहता हो।’’
- **निमकॉफ के अनुसार,** ‘‘समुदाय किसी सीमित क्षेत्र के भीतर सामाजिक जीवन का पूर्ण संगठन है।’’

विद्यालय में समुदाय की भागीदारी के स्तर

विद्यालय में समुदाय की भागीदारी कई रूप में हो सकती है। Shaeffer (1994) ने भागीदारी के सात स्तर बताये हैं :-

1. मात्र सेवा के उपयोग के माध्यम से भागीदारी (जैसे स्कूल में बच्चों को नामांकित करना या प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधा का उपयोग करना);
2. धन, सामग्रियों और श्रम के योगदान के माध्यम से भागीदारी;
3. उपस्थिति के माध्यम से भागीदारी (जैसे स्कूल में माता-पिता की बैठकों में दूसरों के द्वारा लिए गए निर्णयों को निष्क्रिय रूप से स्वीकृति देना);
4. किसी विशेष मुद्दे पर परामर्शदाता के रूप में भागीदारी;
5. अन्य लोगों के साथ एक सेवाप्रदाता के रूप में भागीदारी;
6. प्रतिनिधि शक्तियों के क्रियान्वयनकर्ताओं के रूप में भागीदारी; तथा
7. प्रत्येक चरण (समस्याओं की पहचान, व्यवहार्यता, योजना, कार्यान्वयन और मूल्यांकन) से सम्बन्धित वास्तविक निर्णय लेने में भागीदारी

विद्यालय में समुदाय की भागीदारी के लाभ

समुदाय विभिन्न प्रकार से शिक्षा और विद्यालय की बेहतरी में योगदान देते हैं। यदि विद्यालय में समुदाय की भागीदारी हो तो-

- शिक्षा का स्तर ऊपर उठता है,
- नामांकन और उपस्थिति दर में वृद्धि होती है,
- विद्यालयों के लिए धन जुटाने में मदद मिलती है,
- स्कूल कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ावा मिलता है,
- विद्यालय की सुविधाओं का निर्माण, मरम्मत और सुधार आसानी से होता है,
- श्रम, सामग्री, भूमि, और धन में योगदान मिलता है,
- शिक्षकों और उनकी नियुक्ति को समर्थन मिलता है,

विद्यालय में समुदाय की भागीदारी के लाभ

- शिक्षक उपस्थिति और उनके प्रदर्शन पर निगरानी संभव हो पाती है,
- स्कूलों के प्रबंधन के लिए ग्राम शिक्षा समितियों का गठन हो पाता है;
- शिक्षा की समस्याओं को सुलझाने में सहायता मिलती है;
- लड़कियों की शिक्षा की वकालत और उसका प्रचार करने में सहायता मिलती है;
- शिक्षकों के लिए सुरक्षा और आवास प्रदान करने में सहायता मिलती है;
- विद्यालयों को संचालित करने के लिए बजट की व्यवस्था एवं प्रबंधन में सहयोग मिलता है;
- शैक्षणिक समस्याओं (कम नामांकन, ड्रॉपआउट आदि) के प्रमुख कारकों की पहचान हो पाती है;
- शिक्षा के वातावरण को निर्मित करने में सहयोग मिलता है

विद्यालय में समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करने के तरीके

- समुदाय द्वारा स्कूल के बच्चों के लिए सर्वेक्षण में भाग लिया जा सकता है।
- बाल श्रम या बच्चों के नामांकन न हो पाने आदि समस्याओं के प्रमुख कारकों से सम्बन्धित मुद्दों पर जागरूकता अभियान में समुदाय सहयोग कर सकता है।
- स्कूल मैपिंग, स्कूल का स्थान, भवन निर्माण, कक्षा संचालन, व्यायाम व खेल के साधनों, शौचालय और पेयजल सुविधा जैसी बुनियादी स्कूली सुविधाओं की उपलब्धता के विषय में समुदाय का सहयोग लिया जा सकता है।

विद्यालय में समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करने के तरीके

- ‘शिक्षा के बुनियादी ढांचे या शिक्षण पद्धति में किस प्रकार सुधार लाया जा सकता है?’ इस विषय पर समुदाय एक परामर्शदाता के रूप में सहयोग कर सकता है।
- यदि विद्यालय में कोई शिक्षक अनुपस्थित है अथवा किसी विषय के शिक्षक का अभाव है, ऐसे में समुदाय मददगार सिद्ध हो सकता है। समुदाय के कुछ सदस्य सुविधानुसार उस विषय की कक्षा ले सकते हैं।
- बच्चों की उपस्थिति की निगरानी, शिक्षकों की नियमितता सम्बन्धी मुद्दों में समुदाय योगदान कर सकता है।

विद्यालय में समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करने के तरीके

- विद्यालय में निःशुल्क पाठ्य-पुस्तकों एवं अन्य सहायक सामग्रियों की व्यवस्था, पाठ्य-पुस्तकों तक सभी विद्यार्थियों की समान पहुंच, मध्याह्न-भोजन की गुणवत्ता की निगरानी जैसे कार्य समुदाय द्वारा किये जा सकते हैं।
- समुदाय स्कूल की गतिविधियों की निगरानी में भी मदद कर सकता है।
- विद्यालय समिति, युवा सेवा केंद्र, सलाहकार बोर्ड, पी.टी.ए. बोर्ड आदि की योजना गतिविधियों, विद्यालय कैलेंडर के निर्माण और आपसी चिंता के मुद्दों पर एक साथ काम करने के लिए समुदाय के साथ कई संयुक्त बैठकों को विद्यालय में प्रोत्साहित किया जा सकता है।

विद्यालय द्वारा समुदाय के साथ जुड़ने के तरीके

- समुदाय को विद्यालय से जोड़ने के लिए विद्यालय द्वारा समाज के सदस्यों के हित में काम करने की आवश्यकता है और इस हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।
- विद्यार्थी यदि समाज के हित के लिए कार्य करते हैं तो वह समाज से जुड़ सकते हैं तथा समुदाय के प्रति अपने दायित्वों को प्रारंभिक उम्र में ही समझ सकते हैं।
- उदाहरण के तौर पर विद्यार्थी समुदाय के सदस्यों को विशेष सरकारी व अन्य परियोजनाओं की जानकारी दे सकते हैं, कंप्यूटर के उपयोग का प्रशिक्षण दे सकते हैं जिससे सदस्य लाभान्वित हों। इस प्रकार के कार्यों से समुदाय व विद्यालय के मध्य गहरा संबंध विकसित होगा जिससे दोनों पक्षों का भला होगा।

विद्यालय द्वारा समुदाय के साथ जुड़ने के तरीके

- विद्यालयों में क्या हो रहा है, की जानकारी समुदाय को देने के लिए स्थानीय रेडियो प्रसारण, एफ. एम., केबल टीवी का प्रयोग किया जा सकता है। ये सभी जन संपर्क के माध्यम हैं जिनके द्वारा समाज के सभी वर्ग तक पहुंचा जा सकता है। इन माध्यमों के प्रयोग हेतु शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को प्रोत्साहित किया जा सकता है और साथ ही साथ समुदाय को विद्यालय हेतु एक संसाधन के रूप में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- विद्यालयों में क्या हो रहा है इसके बारे में विद्यार्थी के माता-पिता को समुदाय एवं इसके विभिन्न समूहों से संवाद करने के लिए विद्यालय द्वारा प्रोत्साहित किया जा सकता है। माता-पिता स्कूल के लिए शक्तिशाली वकालत कर सकते हैं और समुदाय का सदस्य होने के कारण ये समुदाय के दूसरे सदस्यों के लिए विश्वसनीय भी होंगें।

- हमेशा समुदाय को स्कूल आने की अपेक्षा करने के स्थान पर विद्यालय के सदस्यों को ऐसे योजना पर कार्य करना चाहिए जिसमें विद्यालय से विद्यार्थी और शिक्षक कार्यस्थलों पर जायें जहाँ कर्मचारी उनसे अपने अनुभवों को साझा करें।
- स्थानीय हस्तियों को स्कूल में आने, विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित करने एवं उनको पढ़ाने के लिए आमंत्रित करना चाहिए।
- पुस्तकालय में अध्ययन करने, ग्रेड स्तर समूहों के शिक्षण, या व्यक्तिगत कक्षाओं में व्याख्यान देने आदि के माध्यम से समुदाय को विद्यालयी गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है।

- यदि समुदाय को यह निरंतर बताया जाए कि उनके द्वारा दी गयी सहयोग राशि या शुल्क किस मद में खर्च किये जा रहे हैं और इससे शिक्षा में किस प्रकार सुधार हुआ है तो सदस्य यह समझते हैं कि उनके द्वारा दिए राशि का दुरूपयोग या अपव्यय नहीं हो रहा है। इसके लिए विभिन्न माध्यमों से सभी सहयोगकर्ताओं को समय-समय पर सूचित किये जाते रहना चाहिए। इससे भविष्य में विद्यालय को कई प्रकार से सहयोग मिलने की सम्भावनाएँ बढ़ती हैं।

- सामुदायिक सेवा परियोजनाओं में माता-पिता या समुदाय के नेताओं, या अन्य सदस्यों; जो विद्यालय हित में कार्य कर सकें और समुदाय के अन्य सदस्यों को जोड़ सकें, के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को शामिल किया जाना चाहिए। उदाहरणस्वरूप विद्यार्थी स्वच्छता सम्बन्धी परियोजनाओं, यातायात संचालन, स्वास्थ्य केन्द्रों आदि पर जाकर काम कर सकते हैं।
- गर्मियों की छुट्टियों या अन्य लम्बी छुट्टियों के दौरान स्थानीय नागरिकों या सेवा समूहों से बात करने के उद्देश्य से समुदाय के मानद सदस्यों से आग्रह करना चाहिए कि वे शिक्षकों व विद्यालय प्रशासकों को आमंत्रित करें। इस दौरान विद्यालय की सफलताओं, उपलब्धियों एवं प्रसंगों को साझा किया जा सकता है।

- उच्च प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए एक समुदाय परामर्श कार्यक्रम को संचालित करना चाहिए। समुदाय के सदस्यों को कम से कम वर्ष में एक या दो बार स्कूल आने के लिए आमंत्रित करना चाहिए और एक-एक करके सभी विद्यार्थियों के साथ समय व्यतीत करने का अवसर देना चाहिए। इस दौरान वे विद्यार्थियों से उनके भविष्य सम्बन्धी लक्ष्यों के बारे में पूछें, उनके भविष्य से सम्बन्धित चिंताओं को सुनें और फिर उन्हें उचित सलाह दें।

- समुदाय की मदद से किये जा सकने वाले गृहकार्य को पाठ्यचर्या में अधिक से अधिक स्थान दिया जाना चाहिए और इस हेतु परिवारों, व्यापारिक समूहों, तथा अन्य सामुदायिक समूहों से आग्रह करना चाहिए कि वे विद्यार्थियों का सहयोग करें। समुदाय के सदस्यगण उस दौरान विद्यार्थियों का गृहकार्य में सम्पादन में सहयोग कर आत्मीय रूप से विद्यालय की गतिविधियों से जुड़ सकते हैं।
- समुदाय को स्कूल कार्यक्रमों में आमंत्रित करें जैसे- वार्षिकोत्सव में; विद्यार्थियों के आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में; कार्यशालाओं में; संगीत, नाटक, चित्रकला आदि से सम्बन्धित कार्यक्रमों में; इत्यादि।

- विभिन्न नौकरियों, रोज़गारों व उच्च अध्ययन से सम्बन्धित कार्यस्थल की वास्तविकताओं के बारे में विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए स्थानीय नागरिक समूहों से अनुभवी व ओजस्वी वक्ताओं को आमंत्रित करना चाहिए। ये वक्ता विद्यार्थियों को साक्षात्कार, नौकरी के अवसरों और उच्च अध्ययन हेतु शैक्षणिक आवश्यकताओं में किसी उम्मीदवार में किन योग्यताओं को ढूंढ़ा जाता है, आदि से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण बातों से अवगत करा सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को उनके आगामी जीवन के लिए योजना बनाने में सहायता मिलेगी।

- यदि विद्यालय में अभिभावकों के आने पर शिक्षक उनके साथ सिर्फ शिकायतें साझा करें, तो शायद वे दोबारा स्कूल आने से बचेंगें। यही बात शिक्षकों के संदर्भ में भी लागू होती है; वे भी सकारात्मक व्यवहार की उम्मीद करते हैं। शिक्षक व अभिभावक के मध्य शिकायती बातचीत के स्थान पर समाधान की दिशा में बातचीत होना चाहिए। व्यावहारिक समस्याओं को व्यावहारिक तरीके से हल करने की दिशा में बढ़ना चाहिए। ऐसे में समुदाय का सहयोग मिलना बहुत सारी समस्याओं के समाधान में मदद करता है।

- विद्यार्थियों में समुदाय के रीति-रिवाजों, परंपराओं और संस्कृति के बारे में समझ विकसित करने के लिए समुदाय के नेताओं, जनजाति के नेताओं आदि के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। विभिन्न स्थानीय समस्याओं व सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में समुदाय के सदस्यों से निरंतर संवाद के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए जिससे विद्यार्थी समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ पाएँ और उनके समाधान के विषय में भी चिंतन कर सकें। समस्याओं के समाधान के लिए विद्यार्थी व समुदाय के सदस्य सम्मिलित अभियान भी चला सकते हैं।

- किस प्रकार समुदाय के सदस्य विद्यालय की गतिविधियों में और विद्यार्थी व शिक्षक समुदाय की गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं यह बताने के लिए विभिन्न प्रकार के दृश्य-श्रव्य कार्यक्रम बनाए जा सकते हैं तथा इसे विद्यार्थियों के अभिभावकों, एवं समुदाय के अन्य सदस्यों को दिखाए जा सकते हैं। इससे प्रेरणा पा कर समुदाय व विद्यालय का सम्बन्ध अधिक प्रगाढ़ हो सकता है।

- जहाँ स्कूलों को सत्तावादी संस्थान माना जाता है, वहाँ माता-पिता और समुदाय के सदस्यों को अपने बच्चों की शिक्षा में भाग लेने का स्वागत नहीं होता है। ऐसे विद्यालय यह मानते हैं कि समुदाय या माता-पिता विद्यालय के मुद्दों में कोई ज़िम्मेदारी लेने में सक्षम नहीं हैं और यह सिर्फ़ शैक्षणिक पेशेवरों का कार्य है।
- इस प्रकार का शैक्षिक वातावरण माता-पिता और बच्चों के लिए प्रतिकूल है। ऐसे संस्थाओं के विद्यार्थियों में कम भागीदारी, खराब अकादमिक प्रदर्शन, और ड्रॉपआउट आदि ज़्यादा देखने को मिलता है।
- अतः आवश्यक है कि विद्यालय को अधिक से अधिक लोकतान्त्रिक बनाया जाए; माता-पिता और समुदाय के सदस्यों को विद्यालय की गतिविधियों व शैक्षिक प्रबंधन में सम्मिलित किया जाए जिससे की विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

धन्यवाद